Various Dimensions of
Social Culture

Editors

Prof. Damodar Shastri
Dr. Bijendr Pradhan
Dr. Hemlata Joshi

Scanned with CamScanner

Various Dimensions of Social Culture

ISBN	**978-93-83634-46-0**
Editing Teem	**2019**
Editors:	**Prof. Damodar Shastri** **Dr. Bijendra Pradhan** **Dr. Hemlata Joshi**
First Edition:	**September, 2019**
Price:	**350/-**
Published by:	**Jain Vishva Bharati Institute** (Deemed University) Ladnun-341306 (Rajasthan) India www.jvbi.ac.in
Printed by:	**Nagar Printing Press,** Kota

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

Section A- English Articles

1. Climate Change and Sustainability in Post Paris Agreement Era — 03-09
   Ankit Sharma

2. Solar energy –A Renewable energy resource — 10-15
   Mukul Saraswat

3. Enhancing Professional Capacity to Literate B.Ed. Trainees with ICT in Teaching Pedagogy: A Study *(With reference to National Policy on Education, 2016)* — 16-27
   Dr. Bhabagrahi Pradhan

4. Role of ICT in Social Work Education & Practices — 28-37
   Dr. Pragati Bhatnagar

5. Prospects of Inclusive Education — 38-48
   Dr. Manish Bhatnagar

6. Challenges for Sustainable Development: Global Perspective — 49-56
   Dr. Vikas Sharma

खण्ड – ब : हिन्दी आलेख

1. चेतना और कायोत्सर्ग का अन्तः–सम्बन्ध : जैनदर्शन के संदर्भ में — 59–66
   डॉ. योगेश कुमार जैन

2. आतापना योग : एक विशिष्ट जैन साधना — 67–75
   डॉ. सुनीता इन्दौरिया

3. वेदों में सृष्टिविज्ञान के सूत्र — 76–86
   डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

Scanned with CamScanner

4. **भारतीय लोकतंत्र और सुशासन** 87–94
डॉ. जुगल किशोर दाधीच

5. **आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य में चेतना** 95–105
डॉ. हेमलता जोशी

6. **भारतीय महिला : दशा एवं दिशा** 106–114
डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़

7. **धार्मिक सहिष्णुता का सशक्त माध्यम : अनेकान्त की शिक्षा** 115–120
डॉ. गिरधारीलाल शर्मा

8. **खदान में काम करने वाले श्रमिकों की समस्याएं एवं कल्याणकारी प्रावधान : एक अध्ययन** 121–130
(डीडवाना तहसील, नागौर (राजस्थान) के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ. पुष्पा मिश्रा

9. **गर्भावस्था में उपयोगी आसन** 131–141
डॉ. विनोद सिहाग

10. **जे. कृष्णमूर्ति का शैक्षिक चिन्तन** 142–148
प्रो. बी. एल. जैन

11. **रैखिक प्रोग्रामन : समस्या एवं हल** 149–156
देवीलाल कुमावत

12. **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शारीरिक व्यायाम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन** 157–165
डॉ. अमिता जैन

13. **मूक बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों की बुद्धि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन** 166–180
रेणु बारियाँ एवं डॉ. गिरिराज भोजक

14. **अजमेर जिले में बी. एड. की विवाहित व अविवाहित महिला प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन** 181–190
डॉ. सरोज राय एवं आशा पारीक

Scanned with CamScanner

चेतना और कायोत्सर्ग का अन्तःसम्बन्ध : जैनदर्शन के संदर्भ में

डॉ. योगेश कुमार जैन

सहायक आचार्य
जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

सारांश

जैनदर्शन में योग शब्द का अर्थ हैं– प्रवृत्ति। मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति को योग कहा गया है। जैन–तत्व–मीमांसा में शुभयोग, अशुभयोग आदि शब्द प्रचलित हैं, किन्तु प्रस्तुत प्रसंग में जैनयोग शब्द का प्रयोग इस क्रियात्मक योग के लिए नहीं हुआ है। यहां योग शब्द जैन साधना पद्धति के अर्थ में प्रयुक्त है। आगम उत्तरवर्ती जैन साहित्य में योग का तत्त्वमीमांसीय अर्थ क्रियात्मकता तो स्वीकृत ही रहा, साथ में साधना के अर्थ में भी इसका प्रयोग होने लगा। जैन आचार्यों ने साधनापरक ग्रन्थों के नाम योगशास्त्र आदि रखे एवं योग का साधनात्मक नाम सर्वमान्य हो गया। आत्मा का सिद्धान्त स्थिर हुआ तब आत्म–विकास के साधनों का अन्वेषण किया गया। आत्म–विकास के उन साधनों को एक शब्द में मोक्षमार्ग या योग कहा गया है। वस्तुतः जैन साधना पद्धति का नाम मोक्षमार्ग है। आ. हरिभद्र ने कहा– "मोक्खेण जोयणाओ जोगो सव्वो वि धम्मंवावारो" वह सारा धार्मिक व्यापार योग है, जो व्यक्ति को मुक्ति से जोड़ता है। योग या मोक्षमार्ग केवल पारलौकिक ही नहीं है, किंतु वर्तमान जीवन में भी जितनी शांति, जितना चैतन्य स्फुरित होता है, वह सब मोक्ष है। मोक्ष चेतना का निज स्वरूप है, शुद्ध स्वरूप है। मोक्ष चेतना में ही प्रकट होता है तथा इसका एकमात्र हेतु ध्यान है और ध्यान का साधन कायोत्सर्ग है। अतः दोनों का अंतःसम्बन्ध स्वतःसिद्ध है।

मुख्य शब्द–चेतना, योग, ध्यान, कायोत्सर्ग, आत्मा, मोक्ष।

परिचय

साधना के क्षेत्र में धर्म और योग इन दो क्रियाओं का सर्वाधिक प्रच आदिकाल से ही रहा है। योग की परम्परा अद्यतन निर्दोष है, परन्तु धर्म के सा अनेक कर्मकाण्ड जुड़ गये। कालक्रम के अनुसार योग की अनेक शाखाऐं प्रचलि हो गई, यथा अध्यात्मयोग, ध्यानयोग, राजयोग आदि। चूंकि जैनाचा अनेकान्तवादी दृष्टि का प्रतिपादन करते हैं, अतः उन्होंने किसी एक शाखा प्राथमिकता न देकर सबका समन्वय ही किया है।

योग का आधार है–गुप्ति

जैन साधना पद्धति में मन–वचन–काय की एकाग्रता को ही गुप्ति अ कायोत्सर्ग कहा जाता है। अतः जैन साधना पद्धति का प्रथम सोपान कायोत्स है तथा ध्यान दूसरा। कायोत्सर्ग की सिद्धि होने पर ही ध्यान का विकास स है। जैन परम्परा में मोक्ष की आराधना के दो मार्ग हैं, श्रावक धर्म एवं मुनि श्रावकों के लिए यथा देवपूजा, गुरू उपासना, स्वाध्याय, संयम की साधना, और दान ये छः आवश्यक कर्तव्य निर्धारित हैं, उसी प्रकार मुनिचर्या के नि पालन हेतु आगमाधारित छः आवश्यक कर्तव्य बताये गये हैं– सामायि चतुर्विंशतिस्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान। कायोत्सर्ग शाब्दिक अर्थ है– काया का उत्सर्ग। काया को अप्रकम्प कर धर्म्य–शुक्ल ध्या में लीन हो जाना ही कायोत्सर्ग है। यह ध्यान की अनिवार्य आवश्यकता

कायोत्सर्ग का लक्षण

कायोत्सर्ग को परिभाषित करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द नियमसार में क हैं कि–

कायाईपरदव्वे थिरभावं परिहरत्तु अप्पाणं।
तस्स हवे तणुसग्गं जो झायइ णिव्विअप्पेण।।[1]

अर्थात् काय आदि परद्रव्यों में स्थिर भाव छोड़कर, जो आत्मा निर्विकल्परूप से ध्याता है, उसे कायोत्सर्ग कहते हैं। मूलाचार में कायोत्सर्ग परिभाषित करते हुये कहा है कि 'दैवसिक निश्चित क्रियाओं में यथा कालप्रमाण पर्यन्त उत्तम क्षमा आदि जिनगुणों को भावना सहित देह में म को छोड़ना ही कायोत्सर्ग है।[2] योगसार के अनुसार देह को अचेतन, नश्व कर्मनिमित्त समझकर जो उसके पोषण आदि के अर्थ कोई कार्य नहीं क वह कायोत्सर्ग का धारक है।

जैनदर्शन में कायोत्सर्ग के दो अर्थ किये जाते हैं– कायोत्सर्ग तप और ...य का शिथिलीकरण।

...योत्सर्ग **का शाब्दिक अर्थ है**– शरीर का शिथिलीकरण। इससे शून्यता ... अभ्यास होता है और एकाग्रता बढ़ती है। काय के पर्यायवाची शब्दों के संदर्भ ... आचार्य भद्रबाहु द्वितीय द्वारा रचित कायोत्सर्ग प्रकरण में कहा गया है कि–

काए सरीरे देहे बुंदी चय उवचय य संघए।
उस्सय समुस्सए वा कलेवरे भत्थ तण पाणू।।
उस्सग्ग–विउस्सरणा उज्झणा य अविकरण–छड्डुण–विवेगो।
वज्जण–चयणुम्मुअणा परिसाडण–साडणा चेव।।[3]

अर्थात् काय, शरीर, देह, बोन्दि, चय, उपचय, संघात, उच्छ्रय, समुच्छ्रय, ...लेवर, भस्त्रा, तनु और पाणु। इसी प्रकार उत्सर्ग के पर्यायवाची ग्यारह हैं– ...त्सर्ग, व्युत्सर्जन, उज्झन, अविकरण, छर्दन, विवेक, वर्जन, त्यजन, उन्मोचना, ...रिशातना और शातना।

इस प्रकार से काय एवं उत्सर्ग के पर्यायवाची शब्दों का विवेचन प्राप्त ...ता है। यह कायोत्सर्ग दो प्रकार का है– चेष्टा और अभिभव। भिक्षाचर्या आदि ...वृत्ति के पश्चात् कायोत्सर्ग करना 'चेष्टा' कायोत्सर्ग है और प्राप्त उपसर्गों को ...हन करने के लिए कायोत्सर्ग करना 'अभिभव' कायोत्सर्ग है।[4] अभिभव ...कायोत्सर्ग का उत्कृष्ट काल एक वर्ष और जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है।

...कायोत्सर्ग के भेद एवं स्वरूप

जैनधर्म–दर्शन मे कायोत्सर्ग का सम्बन्ध केवल शरीर से न होकर आत्मा ...से है, अतः इसका महत्त्व स्वतःसिद्ध है। मूलाचार में कायोत्सर्ग के भेद बताते ...हुए आचार्य वट्टकेर कहते हैं कि–

उट्ठिदउट्ठिद उट्ठिदणिविट्ठ उवविट्ठउट्ठिदो चेव।
उवविट्ठदणिविट्ठोवि य काओसग्गो चदुट्ठाणो।।[5]

अर्थात् उत्थितोत्थित (उत्थित–उत्थित), उत्थित निविष्ट, उपविष्टोत्थित ...और उपविष्ट निवष्ट। इस प्रकार कायोत्सर्ग के चार भेद हैं।

कायोत्सर्ग प्रकरण में कायोत्सर्ग का विवेचन करते हुये इसके नौ भेदों ...का विवेचन किया है। यथा–

उसिउस्सिओ य तह उसिसओ अ उस्सिअनिसन्नओ चेव।
निसननउसिओ निसन्नो निसन्नगनिसन्नओ चेव।।

निवन्नुसिओ निवन्नो निवन्नगनिवननगो अ नायव्वो।
एएसिं तु पयाणं पत्तेयपरूवणं वोच्छं।।[6]

अर्थात् उच्छ्रित–उच्छ्रित, उच्छ्रित, उच्छ्रित–निषण्ण, निषण्ण–उ निषण्ण, निषण्ण–निषण्ण, निषन्न–उच्छ्रित, निषन्न (सुप्त) निषन्न–निष सभी कायोत्सर्ग के भेद हैं।

उच्छ्रित–उच्छ्रित अथवा उत्थितोत्थित–

धम्मं सुक्कं च दुवे झायदि झाणाणि जो ठिरो संतो।
एसो काओसग्गो इह उट्ठिदो णाम।।7।।

अर्थात् जो साधक किसी एक विवक्षित स्थान पर खड़े होकर धर्म शुक्ल ध्यान में प्रवृत्त होता है, उसके उच्छ्रित–उच्छ्रित (उत्थितोत्थित) नाम कायोत्सर्ग होता है। खड़े होकर कायोत्सर्ग करना द्रव्य उच्छ्रित है और धर्म–शु ध्यान रूप भाव का होना भाव कायोत्सर्ग है।[7]

उच्छ्रित (उत्थित)–

जो साधक आर्त्त–रौद्र अथवा धर्म और शुक्ल किसी भी ध्यान में प्र नहीं होता उसके यह द्रव्य उच्छ्रित कायोत्सर्ग होता है। यहां ध्यान का अ होने से भाव उच्छ्रित कायोत्सर्ग है।[8] जो साधक स्वभावतः प्रचलायमान सुषुप्त है वह न शुभध्यान में प्रवृत्त होता है और न अशुभ में। इसी प्र अव्यापारित चित्त वाला साधक जागता हुआ भी शुभ–अशुभ दोनो ध्यान में प्र नहीं होता। क्योंकि निद्रावस्था और सुषुप्तावस्था में ध्यान का अभाव और जा अवस्था में चित्त का अव्यापार, अतः ध्यान का अभाव होने से कोई भी ध्यान न होता। नवजात, मूर्च्छित, अव्यक्त, मत्त, और सुप्त– इनका चित्त स्थगित अव्यक्त होता है तथा आलंबन में प्रगाढ़ रूप से संलग्न होकर चित्त की निष्प्र अवस्था में ही ध्यान होता है। आलंबन में मृदु भावना से संलग्न, अव्यक्त अनवस्थित चित्त की अवस्था को ध्यान नहीं कहा जा सकता है।[9]

उच्छ्रित–निषण्ण अथवा उत्थित निविष्ट–

अट्टं रूद्दं च दुवे झायदि झाणादि जो ठिदो संतो।
ऐसो काओ सग्गो उट्ठदणिविट्ठदो णाम।।10।।

अर्थात्–जो साधक कायोत्सर्ग पूर्वक खड़ा होकर आर्त्त और रौद्र ध्यान करता है उसके उच्छ्रित–निषण्ण कायोत्सर्ग होता है।[10]

...षण्ण–उच्छ्रित अथवा उपविष्टोत्थित–

धम्मं सुक्कं च दुवे झायदि झाणाणि जो णिसण्णो दु।
एसो काओ सग्गो उवविट्ठउट्ठिदो णाम।।11।।

अर्थात्–जो साधक बैठकर धर्मध्यान अथवा शुक्लध्यान में संलग्न होता है उसके निषण्ण–उच्छ्रित अथवा उपविष्टोत्थित कायोत्सर्ग होता है।[11]

...षण्ण–

जो साधक आर्त्त, रौद्र, धर्म अथवा शुक्ल किसी भी ध्यान में संलग्न नहीं ...ता उसके निषण्ण अर्थात् उत्थित निविष्ट उपविष्दोत्थित कायोत्सर्ग होता है।[12]

...षण्ण–निषण्ण अथवा उपविष्टोपविष्ट–

जो साधक बैठकर आर्त्त और रौद्र ध्यान में संलग्न होता है, उसके ...षण्ण–निषण्ण अथवा उपविष्टोपविष्ट कायोत्सर्ग होता है।[13]

इस प्रकार यह निश्चित होता है कि कायोत्सर्ग बैठे–बैठे अथवा ...ड़े–खड़े दोनों अवस्थाओं में संभव है। कायोत्सर्ग को मानसिक अथवा कायिक ...न दो भेदों से भी समझा जा सकता है।

...योत्सर्ग की विधि–

...चार में आचार्य वट्टकेर कायोत्सर्ग की विधि के संदर्भ में कहते हैं कि–

वोसरिदबाहुजुगलो चदुरंगुलअंतरेण समपादो।
सव्वंगचलणरहिओ काउसग्गो विसुद्धो दु।।15।।
जे केई उवसग्गा देवमाणुसतिरिक्खचेदणिया।
ते सव्वे अधिआसे काओसग्गे ठिदो संतो।।16।।
काओसग्गह्मि ठिदो चिंचिदु इरियावधस्स अदिचारं।
तं सव्वं समाणित्ता धम्मं सुक्कं च चिंतेज्जो।।17।।[14]

अर्थात्– कायोत्सर्ग, कायोत्सर्गी और कायोत्सर्ग के कारण का ज्ञान होने ...र ही कायोत्सर्ग का यथार्थ फल प्राप्त होता है। कायोत्सर्ग में संलग्न साधक किसी ...क स्थान पर खड़े होकर दोंनो बाहुओं को लंबा करके पैरों के मध्य चार अंगुल ...का अंतर रखकर समपाद अवस्था में स्थिर होकर हाथ आदि का हलन–चलन नहीं ...करता, उसके शुद्ध कायोत्सर्ग होता है। कायोत्सर्ग में संलग्न साधक चिंतन करता है कि मैं देव, मनुष्य, तिर्यंच तथा अचेतनकृत समस्त उपसर्गों को शांत चित्त से ...सहन करता हूँ। मुनि के लिए यह नियम है कि वह कायोत्सर्ग में धर्म तथा शुक्लध्यान

का ही चिंतन करे। कायोत्सर्ग के काल में प्राणवायु को शरीर के भीतर प्रविष्ट कर उसे आनंद से विकसित हृदयकमल में रोककर, जिनेन्द्र मुद्रा के द्वारा महा णमोकार का ध्यान कारना चाहिए। मंत्र के दो–दो तथा एक–एक अंश पृथक्–पृथक् चिन्तवन करके अन्त में उस प्राणवायु को धीरे–धीरे बाहर निका चाहिए। इस प्रकार नौ बार प्रयोग करने वाले के चिरसंचित महान कर्मराशि न हो जाती निर्जरा को प्राप्त हो जाता है। प्राणायाम में असमर्थ साधक वचनों के द्व भी उस मंत्र का जाप कर सकता है, परन्तु जाप अत्यंत धीमें स्वर में होना चा जिससे उसे कोई न सुने। आचार्यों का यहां स्पष्ट कथन है कि वाचनिक अ मानसिक कायोत्सर्ग में महान अंतर है। दण्डों के उच्चारण की अपेक्षा सौ गु पुण्य–संचय वाचनिक जाप में होता है और हजार गुणा मानसिक जाप में।

कायोत्सर्ग के योग्य दिशा और क्षेत्र–

पाचीणोदीचिमुहो चेदिमहुत्तो व कुणदि एगंते।
आलोयणपंत्तीयं काउसग्गं अणाबाधे।।[18]

अर्थात् साधक को कायोत्सर्ग में बैठने के पहले दिशा और क्षेत्र का ध्या इस प्रकार रखना चाहिए। साधक को उत्तर दिशा की ओर मुंह करके अथ आराध्य देव की प्रतिमा की ओर मुंह करके स्वकृत दोषों की आलोचना के लि क्षपक कायोत्सर्ग करता है। कायोत्सर्ग सर्वदा एकान्त स्थान में, अबाधित स्थ में अथवा जहां किसी का आना–जाना न हो ऐसे अमार्ग स्थान में करना चाहि

कायोत्सर्ग के काल का प्रमाण

कायोत्सर्ग प्रतिदिन एवं अवसरानुसार भी किया जाता है। उत्कृ कायोत्सर्ग का काल एकवर्ष तथा जघन्य काल अंतर्मुहूर्त है तथा शेष कायोत्स दिन–रात्रि आदि के भेद से अनेक प्रकार का है। मूलाचार में अवसरानुस कायोत्सर्ग के काल का प्रमाण इस प्रकार निर्धारित किया है।[19]

क्रमांक	अवसर	उच्छवास प्रमाण
1.	दैवसिक प्रतिक्रमण	108
2.	श्रात्रिक प्रतिक्रमण	54
3.	श्रात्रिकप्रातिक्रमण	300
4.	चातुर्मासिक प्रतिक्रमण	400
5.	वार्षिक प्रतिक्रमण	500

6.	हिंसादिरूप अतिचार में	108
7.	भिक्षा चर्या जाने पर	25
8.	निर्वाण भूमी जाने पर	25
9.	अर्हत् शय्या	25
10.	अर्हत् निषद्यका	25
11.	श्रमण शय्या	25
12.	लघु व दीर्घ शंका	25
13.	ग्रन्थ के आरंभ में	27
14.	ग्रन्थ की समाप्ति पर	27
15.	वन्दना काल में	27
16.	अशुभ परिणाम	27
17.	कायोत्सर्ग के श्वास भूल जाने पर	8 अथवा अधिक

कायोत्सर्ग का फल

कायोत्सर्ग का फल बताते हुये आचार्य कहते हैं कि–

काओसग्गं इरियावहादिचारस्स मोक्खमग्गम्मि।
वोसट्ठचत्तदेहा करंति दुक्खक्खयट्ठाए।।[20]

काओसग्गह्मि कदे जहभिज्जदि अंगुवंगसंधीओ।
तह भिज्जदि कम्मरयं काउसग्गस्स करणेण।[21]

अर्थात् साधक अथवा मुनि गमन काल में अबुद्धि पूर्वक हुये ईर्यापथ के अतिचार को शोधने के लिए तथा पूर्वोक्त अवसरों पर संभावित दोषों के निवारण के लिए मोक्षमार्ग में स्थित शरीर में ममत्व को छोड़ने वाले मुनि दुःख के नाश करने के लिए कायोत्सर्ग करते हैं। कायोत्सर्ग करने पर यथा अंगोपांगों की संधियाँ भिद जाती हैं उसी प्रकार कायोत्सर्ग से कर्मरूपी धूली भी आत्मा से पृथक् हो जाती है। कायोत्सर्ग करने वाला साधक कायबल और आत्मशक्ति का आश्रय करके क्षेत्र, काल और स्वसंहनन इनके बल की अपेक्षा कर कायोत्सर्ग में कहे गये दोषों का त्याग करता हुआ इसमें प्रवृत्त हो। ऐसा करने पर साधक को अतिचार का दोष नहीं लगेगा। अतिचार के संदर्भ में आचार्य कहते हैं कि अपनी

शक्ति और आत्मबल के अनुसार ही कायोत्सर्ग करना चाहिए। जो साधक अ सामर्थ्य को छिपाता है उसे मायाचार का दोष लगता है।

इस प्रकार मोक्ष सुख प्रदान कराने में कायोत्सर्ग का महत्त्व स्वतः सि है, क्योंकि मोक्ष ही प्रत्येक साधक का अन्तिम लक्ष्य है और साधना की पू भी मोक्ष में ही है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नियमसार, गाथा 121.
2. देवस्सियणियमादिसु जहुत्तमाणेण उत्तकालम्हि.
3. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा–467–681 तथा जिणगुणचिंतणजुत्तो काउस्स तणुविसग्गो।। मूलाचार, गाथा 28.
   राजवार्तिक, 6/24/11/530/14.
   भगवती आराधना, 6/32/21. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा 467–68.
4. कायोत्सर्ग प्रकरण, गाथा 1–2.
5. मूलाचार, गाथा 675.
6. भगवती आराधना, 116/278/27.
7. मूलाचार, गाथा 676.
8. मूलाचार, गाथा 674. आचार वृत्ति
9. कायोत्सर्ग प्रकरण, गाथा 31.
10. मूलाचार, गाथा 677 तथा कायोत्सर्ग प्रकरण, गाथा 33–34.
11. मूलाचार, गाथा 678 तथा कायोत्सर्ग प्रकरण, गाथा 40.
12. कायोत्सर्ग प्रकरण, गाथा 41.
13. मूलाचार, गाथा 679.
14. मूलाचार, गाथा 651.
15. मूलाचार, गाथा 652.
16. मूलाचार, गाथा, 657.
17. मूलाचार, गाथा
18. अट्ठसंद देवसियं कल्लद्धं पक्खियं च तिण्णिसया.
19. उस्साया कायव्वा णियमंते अप्पसत्रेण। मूलाचार, गाथा 659.
20. मूलाचार, गाथा 664.
21. मूलाचार, गाथा 668.